संस्कृत B.A., M.A., Ph.D.
शास्त्री तथा आचार्य्य छात्रोपयोगी

H.D. 19

# नाटक लहरी

लेखक :
पंडित जमीत रामात्मज कवितार्किक
ज्योतिष शास्त्र निष्णात
पं० ज्ञानचन्द्र शर्मा वेदान्त शास्त्री



*Publisher*
SANSAR CHAND SHARMA
25-C, GREEN PARK, EXTENSION
DELHI.

*Price Re. 1-00*

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

# भूमिका

जिस दिन किसी बालक ने खेल ही खेल में अपने किसी बड़े आदमी का अनुकरण किया उसी दिन से नाटक का जन्म हुआ 2. नाटक की उत्पत्ति का मूल कारण वीर पूजा है। 3. गुडियों या पुतलियों के खेल से (Puppet show) नाटक का जन्म हुआ इस का आधार सूत्रधार शब्द बतलाता है सूत्र का अर्थ है धागा और धार का अर्थ है पकड़ने वाला। यानी सूत्रधार गुड़ियों या पुतलियों से खेल करने वाला 4. कई विद्वानों का विचार है कि सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात नाटकों का भारत में प्रचार हुआ इस में हेतु वह यवनिका (पड़दा) आदि शब्दों को बतलाते हैं। नाटक दृश्य काव्य है संस्कृति में दृश्य काव्य को रूपक कहते हैं और नाटक रूपकों के 10 भेदों में से एक है। भारत वर्ष में नाटक का स्थान बहुत ऊंचा है और भारतीय इसे वेद के समान पवित्र मानते हैं और इसी कारण इसे नाट्य-वेद कहा है नाटक आनन्द के साथ-साथ उपदेश भी देता है जो विषय कई बार सुनने पर समझ में नहीं आता वह रंगभूमि (Stage) पर देखने मात्र ही से समझ में आ जाता है। नट शब्द की व्युत्पत्ति etymology and derivation पाणिनि ने नट् नृत्ते और नट् अवस्पन्दने धातुओं से की है सिद्धन्तकौमुदीकार[1] भट्टोजी दीक्षित के कथनानुसार वाक्यर्थ का अभिनय नाट्य है और पदार्थ का अभिनय ही

1. वाक्यार्थाभिनयो नाट्यम्। पदार्थाभियो नृत्यम् सिद्धान्तकौमुद्यायान्।

नृत्य है। दशरूपककार धनंजय ने[1] ताल के आश्रित नृत्य को माना है अंग्रेज़ी में सुखान्त Comedy और दुःखान्त Tragedy दो भेद माने हैं जिस प्रकार संस्कृत वाङ्मय व्याकरण के नियमों से बद्ध है उसी प्रकार संस्कृत नाटक नाट्य शास्त्र के नियमों के अधीन है।

संस्कृत नाटकके आरम्भ में नान्दी और अन्त में भरत वाक्य अवश्य आता है। स्त्री, शूद्र और भृत्य आदि का भाषण प्राकृत में रहता है पात्रों के देश के अनुसार प्राकृत होती है। वह शौरसेनी, मागधी, पैशाची और शाकारी आदि हैं। महाभष्यकार पतंजली के समय भारत में नाटकों का प्रचार था उसमें कंसवध और बलिवन्ध दो नाटकों का जिकर आता है[2] काव्य जगत् में नाटक का स्थान बहुत उच्च है संस्कृत नाट्य शास्त्र में 1. नाटक 2. प्रकरण 3. भाण 4. प्रहसन 5. डिम 6. व्यायोग 7. समवकार 8. वीथी 9 अंक 10. और ईहामृग यह 10 रूपक हैं। 1. नाटक में कम से कम 5 अंक (act) और ज्यादा-से ज्यादा 10 अंक होते हैं इस का आधार (Plot) कोई प्रसिद्ध कथा होती है इस में 5 सन्धियाँ होती हैं इस का नायक कोई राजा या राजर्षि होता है इस में श्रृंगार या वीर रस प्रधान रहता है अन्य रस उसके अंगभूत होते हैं दश अंकों के नाटव को महानाटक कहते हैं जैसे अभिज्ञान-शाकुन्तल और हनुमन्नाटक। 2. प्रकरण इस में कविकल्पित लौकिक कथा रहती है और नायक कोई अधिक प्रसिद्ध नहीं होता इस में अंकों का कोई नियम नहीं है प्रायः 10 अंक होते हैं जैसे मृच्छ-कटिक, मालती-माधव आदि।

3. भाणः—इस में कोई कल्पित धूर्त चरित रहता है और यह एक ही अंक का होता है— 4. प्रहसन इस में हास्य रस रहता है और वह एक ही अंक का होता है जैसे मत्तविलास, लटकमेलक 5. डिम इस

---

1. अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्। भावाश्रयं नृत्यम्। नृत्यंतालाश्रयम् दशरूपके।
2. काव्येषु नाटकं रम्यम्

में हास्य और शृंगार रस के अतिरिक्त रस होता है और इसमें 4 अंक होते हैं जैसे त्रिपुरदाह 6. व्यायोग इस में भी वीर और शृंगार के अतिरिक्त रस होता है और एक ही अंक होता है जैसे सौगन्धिकाहरण 7. समवकार इस में नाटक के सदृश आमुख होता है परन्तु अंक तीन ही होते हैं जैसे समुद्रमथन 8. वीथी इसमें प्रधान शृंगार रस होता है और इस में कोई कल्पित धूर्तचरित रहता है और एक ही अंक होता है 9. अंक इस में करुणारस होता है और एक ही अंक होता है जैसे शर्मिष्ठा ययाति 10. ईहामृग इसमें दिव्य और लौकिक दोनों प्रकार का मिश्रित कथानक रहता है और 4 अंक होते हैं जैसे रुक्मिणी परिणय। इन रूपकों के अतिरिक्त 18 उपरूपक हैं 1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्टी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थान 7. उल्लाप्य 8. काव्य 9. प्रेङ्खण 10. रासक 11. संलापक 12. श्रीगदित 13. शिल्पक 14. विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणी 17. हल्लीश 18. भाणिका।

1. नाटिका—इस में 4 अंक होते हैं स्त्री पात्र विशेष होते हैं और नायक कोई प्रसिद्ध धीर-ललित राजा होता है जैसे रत्नावली, विद्धशालभंजिका आदि

2. त्रोटक इसमें 5, 7, 8 या 9 अंक होते हैं और प्रत्येक अंक में विदूषक का प्रवेश अवश्य रहता है जैसे विक्रमोर्वशी 3 गोष्ठी के एक अंक 9 या 19 प्राकृतिभाषी पुरुष पात्र और 5 या 6 स्त्री पात्र रहते हैं जैसे रैवतमदनिका। 3 सट्टक में अंक के स्थान पर जवनिका होती है इसमें 4 जवनिका होती हैं और केवल प्राकृत भाषा ही प्रयुक्त होती है जैसे कर्पूरमंजरी 5 नाट्यरासक इसमें एक अंक होता है और उदात्त नायक और हास्य रस प्रधास रहता है जैसे विलासवती। 6 प्रस्थान में दो अंक होते हैं और नायक, नायिका, दास, दासी रहते हैं जैसे शृंगारतिलक। 7 उल्लाप्य इस में एक या तीन अंक होते हैं और एक दिव्य या उदात्त नायक और 4 नायिकायें होती हैं जैसे पार्थपाथेयदेवीमहादेव। 8 काव्य

इसमें एक अंक और हास्य रस रहता है इसमें स्त्री ही नायक का काम करती है जैसे यादवोदय। 9 प्रेङ्खण में एक अंक और हीन नायक होतें है इसमें सूत्रधार नहीं रहता जैसे बालिबध। 10 रासक इसमें एक अंक और मूर्खनायक रहता है जैसे मेनकाहित। 11 संलापक इसमें 3 या 4 अंक होते हैं नायक पाखण्डी और शृंगार-करुणा से अतिरिक्त रस होते हैं जैसे मायाकापालिक। 12 श्रीगदित इसमें एक अंक और प्रख्यात व उदात्तनायक रहता है इसका संविधानक प्रसिद्ध होता है जैसे क्रीडा-रसातल। 13 शिल्पक इसमें 4 अंक और ब्राह्मण नायक होता है इसमें शान्त और हास्य रस नहीं होते जैसे कनकावतीमाधव। 14 विलासिका इसमें एक अंक और नायक नहीं होता इसमें शृंगार रस प्रधान रहता है। 15 दुर्मल्लिका इसमें 4 अंक और नायक नहीं होता जैसे विन्दुमती। 16 प्रकरणी नाटिके सदृश ही होती है किन्तु इसका नायक सार्थवाह और नायिका भी सदृशकुल की होती है। 17 हल्लीश में एक अंक होता है और 7-8-10 स्त्रियाँ होती है जैसे केलिरैवत 18 भाणिका में एक अंक और उदात्तनायिका होती है जैसे कामदत्ता।

रूपक के प्रारम्भ होने से पहले नट लोग नेपथ्य में पूजन स्तुति आदि करते हैं उसको पूर्वरंग कहते हैं। रंगभूमि (Stage) पर आरम्भ में मंगलाचरण और आशीर्वचनों से युक्त स्तुति को नान्दी कहते हैं। नान्दी के बाद सूत्रधार प्रविष्ट होकर अपनी स्त्री या अन्य नट से भाषण करते हुए प्रेक्षकों को उस रुपक के रचयिता और नाटक की कथा का परिचय कराता है इसे प्रस्तावना या आमुख कहते हैं।

नाटकोत्पत्ति के विषय में भारतवर्ष में कुछ कथाएँ परम्परा से चली आ रही हैं उन सबका सारांश यह है। मनुष्यों को अत्यन्त दु:खी देख कर इन्द्रादि देवता व्रह्मा के पास गये और ऐसे वेद के निर्माण करने की प्रार्थना की जिस में अनधिकारी स्त्री, शूद्र आदि सभी लोगों का मनो-

रंजन हो यह सुनकर ब्रह्मा ने चारों वेदों का ध्यान कर[1] ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गायन यजुर्वेद से अभिनय और अर्थवेद से रस लेकर धर्म, अर्थ-काम यश उपदेशयुक्त नाट्यवेद नामक पंचम वेद की रचना की तब ब्रह्मा ने भरतमुनि से कहा कि तुम संसार में इसका प्रयोग करो उन्होंने इसका प्रयोग किया इसमें देवताओं का उत्कर्ष और दानवों का अपकर्ष दिखलाया। इसे देख कर दानवों ने विघ्न डालने शुरू किये तब इन्द्र ने उनके उपद्रवों से बचने के लिये विश्वकर्मा को नाट्यगृह (Cenema Hall) बनाने की आज्ञा दी।

## भास ई० पूर्व 400

भारत में सबसे पहले प्रसिद्ध नाटककार भास हुए यह कालिदास से पूर्व हुए क्योंकि कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्र की भूमिका में भास का नाम बड़े आदर से लिया है और साथही सौमिल्ल और कविपुत्र का भी नाम निर्देश किया है पर पिछले दोनों के नाटक अब उपलब्ध नहीं होते। पर 1912-13 के लगभग गरणपत्ति-शास्त्री ने त्रिवेन्द्रम से भास के नाम से 13 नाटकों को प्रकाश किया। यह किसी क्षत्रपराजा के आश्रित थे और किंवदन्ती के अनुसार जाति के धोबी थे और उज्जायनी के रहने वाले थे इनके 13 नाटकों के यह नाम हैं।

(1) स्वप्नवासवदत्तम् (2) प्रतिज्ञायोगंधरायण (3) बालचरित (4) पंचरात्र (5) प्रतिभा (6) अभिषेक (7) अविमारक (8) दरिद्रचारुदत्त (9) मध्यमव्यायोग (10) दूतवाक्यम् (11) दूतघटोत्कच (12) कर्णभार (13) उरुभंग हैं।

बहुत से विद्वान इन्हें भासकृत मानते हैं और बहुत से इनके भास

---

1 जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेवच।
यजुर्वेदादभिनयात् रसानाथर्वणादपि॥

भरतनाट्य शास्त्र

कृत होने में संदेह करते हैं पर स्वप्नवासवदत्तम् और प्रतिज्ञायौगन्धरायनम् को सबने भासकृत माना है।[1] राजशेखर का यह कहना है कि [1]स्वप्नवासवदत्तम् तथा प्रतिज्ञायौगंधरायण निश्चित रूप से भास के उच्चकोटि के नाटक हैं इन सबको परीक्षार्थ (आलोचना की) अग्नि में फेंका जाने पर स्वप्नवासवदत्तम् न जलाया जा सका। भास की संस्कृत में कई अपाणिनीय प्रयोग मिलते हैं और कई सन्धियां अशुद्ध हैं इनके नाटकों की प्राकृत प्रायः शौरसेनी है।[2] बाणभट्ट ने भी हर्षचरित के आदि में भास के नाटकों का ज़िकर किया है और उनके श्लोक से स्पष्ट है कि भास के नाटकों का आरम्भ सूत्रधार से होता है। परन्तु कालिदास के नाटकों का आरम्भ नान्दी से।

1. स्वप्नवासवदत्तम् यह 6 अंकों का नाटक है इसमें उदयन को सार्वभौम प्राप्ति के लिये मगधराज कन्या पद्मावती से विवाह की आवश्यकता जान कर यौगन्धरायण का वासवदत्ता के साथ अग्नि में भस्म हो जाने का प्रवाद फैलाकर वासवदत्ता को पद्मावती के यहां न्यासरूप से रखना। उदयन तथा पद्मावती का विवाह। संयोग से वासवदत्ता का पद्मावती के घर में सुप्त उदयन का खटिया पर से लटकते हुए हाथ को ठीक करने में राजा के जागने पर भागना, राजा का विलाप और यौगन्धरायण के आने पर राजा उदयन वत्सराज को सर्व रहस्य का ज्ञान तथा वासवदत्ता प्राप्ति के साथ सम्राट होने का वर्णन है।

2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण यह 4 अंकों की नाटिका है इस में उज्जैन के प्रधान महासेन की रूपवती कन्या वासवदत्ता का हरण करने के लिए कौशाम्बी के वत्सराज के मन्त्री यौगन्धरायण की प्रतिज्ञ तथा वत्स-

---

1 भासनाटकचक्रेपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः॥ राजशेखरः

2 सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशो लेभे भासो देवकुलैरिव॥ बाणभट्टः

राज को महासेन के बन्धन से छुड़ाने का तथा वत्सराज और वासव दत्ता के विवाह का वर्णन है।

3. बालचरित यह 5 अंकों का नाटक है इस में कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन है।

4. पंचरात्र इसमें शकुनी की राये से अज्ञात वास में स्थित पाण्डवों का पाँच दिन में पता लगाने का वर्णन है

5. प्रतिभा यह 7 अंकों का नाटक है इस में रामायण के प्रथम 3 काण्डों की कथा वर्णित है

6. अभिषेक यह 6 अंकों का नाटक है इस में रामायण की किष्किन्धा काण्ड से युद्धकाण्ड के समाप्ति तक की कथा का तथा रामराज्याभिषेक वर्णित है।

7. अविमारक यह 6 अंकों का नाटक है इसमें सौवीर के राजा कुन्ति-भोज की रूपवती कन्या कुरंगी का किसी अविमार नामक राजपुत्र से प्रच्छन्न विवाह का वर्णन है।

8. दरिद्रचारुदत्त यह 4 अंकों का अपूर्ण नाटक है इस की कथा कवि कल्पित है इस का नायक चारुदत्त और नायिका वसन्तसेना है यही 4 अंक कुछ भेद से शूद्रक के मृच्छकटिकनाटक के 4 प्रथम अंक हैं इसीलिए मृक्छकटिक चारुदत्त का विस्तर माना जाता है।

9. मध्यमव्यायोग यह एक अंक का व्यागो है इस में महाभारत के आधार पर एक ब्राह्मण की कथा अपनी कल्पना के अनुसार वर्णित है।

10. दूतवाक्यम् यह भी एक अंक का व्यायोग है इस में कृष्ण का कौरव पाण्डवों की सन्धि के लिए दूत होकर जाने की महाभारत की कथा वर्णित है।

11. दूतघटोत्कच यह एक ही अंक का व्यायोग है इस में कौरव सभा में घटोत्कच का पाण्डों का दूत बनकर आने का वर्णन है।

12. कर्णभार यह एक अंक का व्यायोग है इस में इन्द्र ब्राह्मण के रूप में कवच कुण्डल भिक्षा माँगने की कथा वर्णित है।

13. उरुभंग यह भी एक अंक का व्ययेगा है इस में भीम दुर्योधन का गदा युद्ध तथा दुर्योधन का उरुभंग वर्णित है।

## कासिदास ई 100 पूर्व

कालिदास की जन्म भूमि के विषय में कुछ विद्वान उन को वंगाली कुछ काश्मीरी और कुछ उज्जयिनी कां वतलाते हैं और इन की मृत्यु के विषय में कहा जाता है कि,यह लंका के किसी कुमारदास नामक राजा की सभा में अतिथि वन कर गये थे और वहाँ किसी वेश्या के घर इन की मृत्यु हुई थी। इन की रचना में शिव का वारम्वार वर्णन मिलने से प्रतीत होता है कि यह शैव थे। प्रसन्नराघव नाटककार जयदेव ने तो इन को (कविकुल-गुरु) कहा हैं और यह[1] विक्रमादित्य के नवरत्नों में थे। इन्होंने मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी और अभिज्ञानशाकुन्तल तीन नाटक और दो महाकाव्य कुमारसंभव और रघुवंश और एक खण्डकाव्य मेघदूत रचा। मालविकाग्निमित्र यह 5 अंकों का नाटक है इस में[2] शुंग वंश के राजा अग्निमित्र का विदर्भराजकन्या मालविका के साथ विवाह और प्रेमादि का वर्णन है।

1. नवीन ज्योतिष ग्रन्थ ज्योतिर्विदाभरण के एक श्लोक का आशय है

1. धन्वन्तरि 2. क्षपणक 3. अमरसिंह 4. शंकु 5. वेतालभट्ट 6. घटकर्पर 7. कालिदास 8. वराहमिहिर 9. वररुचि। यह राजा विक्रम के नवरत्न थे।

2. मौर्य्यवंश के अन्तिम राजा वृहद्रथ बौद्ध होते हुए भी विलासी थे इस लिए उस की प्रजा उन से अप्रसन्न थी ई० पूर्व 185 में इन के ब्राह्मण सेनापति पुष्पमित्र शुंग ने इन का वध किया और स्वयं

गद्दी पर वैठकर शुंगवंश की स्थापना की इसके सिंहासन पर बैठते ही कलिंग के खारवेल राजा ने हमला किया पर पुष्यमित्र ने उसे परास्त किया। पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया यह बात कालिदास के मालविकाग्निमित्र तथा पतंजली के महाभाष्य से सिद्ध होती है। महाभाष्य के एक वचन से ज्ञात होता है कि स्वयं पतंजली इस यज्ञ में प्रधान ऋत्विज थे। इस यज्ञ के दो या तीन वर्षों में पुष्यमित्र की मृत्यु हो गई इसके बाद उसका पुत्र अग्निमित्र जो विदिशा का युवराज था गद्दी पर बैठा इसी के उपलक्ष्य में कालिदास ने अपना मालविकाग्निमित्र नाटक रचा। इसने वहुत थोड़े समय तक राज्य किया इसके बाद इसके वड़े भाई वसुज्येष्ठ ने 7 वर्ष राज्य किया और अपना उत्तराधिकारी अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र को वनाया। यह वसुमित्र अपने पितामह के अश्वमेध यज्ञ के समय अश्व का संरक्षक था इसके बाद इस वंश के 6 राजा हुए अन्तिम राजा देवभूति का वध उसके मंत्री वासुदेव काण्व ई० पू० 73 में कर स्वयं राजा वन बैठा।

विक्रमोर्वशीय 5 अंकों का नाटक है इस में उर्वशी और पुरुखा राजा के प्रेम का वर्णन है। अभिज्ञानशाकुंतल यह 7 अंकों का नाटक है इस में दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा का वर्णन हैं।

कुमारसंभव इस में 17 सर्ग हैं केवल 8 सर्गों पर मल्लिनाथ की टीका है अगले 9 सर्गों के टीकाकार कोई सीताराम कवि हैं। मल्लिनाथ की टीका प्रथम 8 सर्गों ही पर रहने के कारण विव्दानों ने कालिदास का विरचित यह काव्य अष्टमसर्ग तक अतएव अपूर्ण माना है अगले सर्गों की रचना किसने की यह अभी तक निश्चित रूप से ज्ञात नहीं हुआ। अष्टमसर्ग में कालिदास ने शिव-पार्वती का रतिवर्णन किया है जो अनुचित है इस पर कालिदास के समकालीन विद्वानों ने कटु आलोचना की अतः कालिदास ने अष्टमसर्ग से आगे रचना ही नहीं की साहित्य शास्त्रियों ने अपने अलंकार ग्रन्थों में 8 सर्ग से आगे के सर्गों में से एक भी पंक्ति उद्धृत

नहीं की क्योंकि वह इसे कालिदास की रचना नहीं मानते। इस महा-काव्य में महादेव के पुत्र कार्तिकेय (कुमार) के जन्म का वर्णन है इस काव्य पर 23 टीकाएँ हैं पर मल्लिनाथ की संजीवनी सर्व श्रेष्ट है। रघुवंश इस में इक्ष्वाकु वंश के राजाओं का वर्णन है और वह दिग्विजय करते-करते वक्षु (oxus) (यह नदी पामीर से निकल कर अरल सागर में गिरती है) तक पहुँचे इस काव्य पर 24 टीकाएँ हैं पर मल्लिनाथ की संजीवनी सब से श्रेष्ठ है।

मेघदूत यह शृंगार रस का सर्व श्रेष्ट खण्ड काव्य है इस में 121 पद्यों में कवि ने एक विरही यक्ष की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण किया है 12 शतक में होने वाले धोयी कविने अपने पवनदूत में इस का अनुकरण किया है यह ग्रन्थ पूर्व और उत्तर इन दो विभागों में विभक्त है इस का छंद मंदाक्रान्ता है[1] क्षेमेन्द्र ने अपने सुवृत्ततिलक में कालिदास के मंदाक्रान्ता वृत्त की अत्यन्त प्रशंसा की है।

इसमें अवन्ति प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का सूक्ष्म वर्णन किया है। इसकी कल्पित कथा इस प्रकार है कि कुबेर के शाप के कारण रामगिरि पर वर्ष भर के निवास को गुजारता हुआ कोई यक्ष वर्षाकाल के आरम्भ में आकाश से घिरे बादल को देखकर वियुक्त प्रिया की याद से तड़प उठा और बादल से प्रार्थना करता है कि वह अलकापुरी में जाकर उसकी प्रिया को सन्देश पहुँचादे तो बड़ा उपकार होगा। इस पर 32 टीकाएँ हैं मल्लीनाथ की संजीवनी सर्वश्रेष्ठ है इसके हिन्दी में 6 पद्यानुवाद हो चुके हैं। पहले श्लोक में रामगिरि को चित्रकूट लिखकर मल्लीनाथ ने भौगोलिक भूल की है रामगिर वस्तुतः रामटेक पहाड़ी है जो नागपुर के समीप है।

कुछ लोगों का विचार है कि मेघदेत में विरहीयक्ष का चित्रण कर

---

1 सुवशा कालिदासस्य मंदाक्रान्ता प्रवल्गति।
सदश्वदमकस्येव काम्बोजतुरगांगना॥

सुवृत्ततिलके

कालिदास ने प्रकारान्तर से अपनी ही किसी घटना को चित्रित किया है। प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ जनश्रुति के आधार पर कहते हैं कि कालिदास ने मेघदूत की कल्पना वाल्मीकि-रामायण[1] की उस घटना से ली है जहाँ राम-सीता के प्रति हनुमान द्वारा सन्देश भेजते हैं। बाण ने अपने हर्ष-चरित[2] के आदि में कालिदास की बड़ी प्रशंसा की है। कालिदास के प्रति किसी आलोचक की उक्ति है कि प्राचीन काल में कवियों की गणना करने का प्रसंग आने पर कालिदास का नाम सर्वप्रथम कनिष्टका अंगुली पर रखा गया, किन्तु कालिदास की बराबरी करने वाला कोई कवि[3] न निकला, इसलिए दूसरी अंगुली पर किसी का नाम पड़ा ही नहीं, इसी-लिए उस अंगुली का नाम अनामिका पड़ा। ऋतुसंहार को कुछ विद्वान् कालिदास की रचना नहीं मानते, क्योंकि उनकी भाषा उनके अन्य ग्रन्थों की तरह परिष्कृत नहीं है और मल्लिनाथ ने भी ऋतुसंहार पर टीका नहीं लिखी और अलंकार ग्रन्थों में इसका कोई उद्धरण नहीं दिया गया। यह मत ठीक नहीं क्योंकि ऋतुसंहार कालिदास की सर्वप्रथम साहित्यक रचना है इसलिए इतनी परिष्कृत नहीं सरलता के कारण उस पर मल्लीनाथ ने टीका नहीं लिखी। कवि की अन्य प्रौढ़ एवं परिष्कृत रचनाओं के मौजूद होने पर अलंकार शास्त्र के आचार्य उसके बाल प्रयास के क्यों उदाहरण देते। वत्सभट्टि के शिला लेख 472 ई० में उसके अनुकरण की छाप स्पष्ट दीख पड़ती है। ऋतुसंहार में 6 सर्ग और 144 श्लोक हैं। इसमें ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त

---

1. सीतां प्रति रामस्य हनुमत्संदेशं मनसि निधाय मेघ सन्देशं कृतवानित्याहुः।
2. निर्गतासुनवा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मंजरीष्विव जायते।। हर्षचरिते
3. पुरा कवीना गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्य कवेरभावादनामिकासार्थवती बभूव।।

का वर्णन है ।[1] संस्कृत-साहित्य में कालिदास नामक अनेक विद्वान् हुए । नवसाहसांक चरित का कर्ता पद्मगुप्त भी परिमल कालिदास कहलाता था यह धारा के स्वामी मुंज का सभा पंडित था ।

धारा के स्वामी भोज की सभा में भी एक कालिदास था । ज्योतिर्भिदाभरण के रचयिता कोई कालिदास थे । श्रुतबोध का रचयिता अन्य कालिदास था । समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त के समय उनका मंत्री हरिशेण भी कालिदास कहलाता था राजशेखर[2] ने अपनी सूक्ति मुक्तावलि में तीन कालिदास माने हैं । जिस कालिदास के सम्बन्ध में लिखा जा रहा है वह इन सब कालिदासों से प्राचीन तथा भिन्न था इसी की प्रशंसा बाणादि कवियों ने की है और वह उपमालंकार का परम प्रिय था ।

जनश्रुति है कि कालिदास ने श्रृंगारतिलक नामक एक और काव्य की रचना की है जिसमें केवल 23 पद्य हैं ।

## शूद्रक ई० 200

इन्होंने मृच्छकटिक नामक नाटक लिखा जो अपने ढंग का अकेला ही नाटक है कुछ विद्वानों के मतानुसार मृच्छकटिक ही संस्कृत का सर्वप्रथम नाटक है । इसकी प्रस्तावना में बताया है कि इसकी रचना द्विजश्रेष्ठ शूद्रक ने की थी जो ऋग्वेद, सामवेद, हस्ति-शिक्षा गणित आदि विद्याओं और कलाओं में पारंगत था जिसने अपने पुत्र को राजा बनाकर 100 वर्ष से अधिक आयु में अग्नि प्रवेश किया था । मृच्छकटिक 10 अंकों का

---

1. एकोपि जीयते हन्त कालिदासो न केन चित् ।
श्रृंगारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु ।। राजशेखरः
2. उपमा कालिदासस्य भारवेऽर्थं गौरवम् ।
दण्डिना पद लालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः ।।

एक प्रकरण है उसकी कथा का संक्षेप यह है कि उज्जयिनी की प्रसिद्ध वेश्या वसन्तसेना चारुदत्त नामक ब्राह्मण पर आसक्त थी उधर राजा का साला ( शकार ) वसन्त सेना को अपने वश में करना चाहता था। उसने किसी प्रकार का षड्यन्त्र किया जिससे वसन्तसेना के वध का आरोप चारुदत्त पर लगा और उसे मृत्यु दण्ड की आज्ञा हुई परन्तु वसन्त सेना मरी नहीं उसे होश आगई और उसने चारुदत्त को वध स्थान में जाकर बचा दिया। इस नाटक का नाम मृच्छकटिक प्रकरण की एक घटना से लिया गया है। चारुदत्त का पुत्र रोहसेन अपनी मिट्टी की गाड़ी से खेलना मने कर देता है वह भी पड़ोसी के लड़के की तरह सोने की गाड़ी से खेलना चाहता है। एक दिन चारुदत्त का पुत्र अपनी मिट्टी की गाड़ी लेकर वसन्त सेना के घर जाता है तो वह उसे सोने के भूषणों से भर देती है और कहती है कि इससे सोने की गाड़ी खरीद लो। मृच्छ-कटिक (मिट्टी की गाड़ी) यह नाम इसी घटना से सम्बन्ध रखता है। इसके कई प्रयोगों से अनुमान होता है कि इसका रचयिता शूद्रक दाक्षिणात्य था जैसे वसन्तसेना के हाथी का नाम 'खुण्टमोडक' और पैसे का नाम 'णाणक' इत्यादि। नाटककार संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का प्रौढ़ ज्ञान रखता था इसमें शौरसेनी, मागधी, चाण्डाली, शकारी, ढक्की आदि प्राकृतों का अच्छा जानकार था। प्राकृत के प्रयोगों की दृष्टि से मृच्छकटिक का संस्कृत नाटकों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मृच्छकटिक के रचयिता राजा शूद्रक के विषय में कई दन्तकथायें प्रचलित हैं। मृच्छकटिक की प्रस्तावना में शूद्रक का परिचय दो श्लोकों में दिया गया है उनमें उसकी मृत्यु का भी वर्णन है। किन्तु किसी कवि का अपनी ही रचना में स्वयं अपनी मृत्यु का उल्लेख करना असम्भव है अतः प्रस्तावना के यह दो श्लोक प्रक्षिप्त जान पड़ते हैं। शूद्रक एक राजा थे और वही मृच्छकटिक का रचयिता था ऐसा वामन अपनी अलंकार सूत्रवृत्ति में स्वीकार करता है। कीथ का मत है कि किसी अज्ञात कवि रामिल या सौमिल्ल या दोनों ने भास के चारुदत्त नाटक को परिवर्धित

कर उसे मृच्छकटिक का नाम दिया और प्रसिद्ध राजा शूद्रक के नाम से उसे प्रसारित किया। कालिदास के अनुसार मृच्छकटिक के रचयिता रामिल और सौमिल्ल रहे होंगे क्योंकि इन्हीं का उल्लेख उन्होंने मालविकाग्निमित्र में किया है। कादम्बरी में शूद्रक विदिशा का राजा था। दण्डी के दशकुमारचरित में शूद्रक का संकेत मिलता है। कल्हण ने राजतरंगिणी में शूद्रक का नाम विक्रमादित्य के साथ दिया है। स्कन्धपुराण में यह आन्ध्रभृत्य राजाओं का प्रथम माना जाता है। वेतालपंचविंशति में शूद्रक की आयु 100 वर्ष की निर्दिष्ट है। यह राजा मौर्य्यसम्राट अशोक के बाद हुआ था ऐसा कहा है क्योंकि अशोक के समय से ब्राह्मण को वध दण्ड दिया जाने लगा जिसका उल्लेख इस नाटक में चारुदत्त के वधदण्ड में मिलता है। यथार्थ में शूद्रक एक ब्राह्मण राजा था और उसी ने इस नाटक की रचना की। इस नाटक का नायक चारुदत्त और नायिका वसन्तसेना हैं। इस पर पृथ्वीधर की विवृत्ति नाम की टीका प्रकाशित तथा उपयुक्त है।

## महेन्द्रविक्रम वर्मा ई० 600

इसका विरचित मत्तविलास नाम का प्रहसन है यह काञ्ची के पल्लव राजासिंहविष्णु वर्मा का पुत्र था इनकी मत्तविलास उपाधी थी इन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे पर केवल यह प्रहसन ही उपलब्ध होता है मत्तविलास—यह एक प्रहसन है सब उपलब्ध प्रहसनों में यही सबसे प्राचीन है। यद्यपि यह एक अंक का ही रूपक है तथापि इसमें अनेक प्राकृत भाषाओं का प्रयोग है जिनमें शौरसेनी और मागधी प्रधान हैं दो एक संस्कृत बोलने वाले पात्र भी इसमें हैं इसकी प्राकृत भाषा भास के रूपकों के प्राकृत से बहुत सादृश्य रखती है इसके आदि और अन्त में नान्दी और भरत वाक्य हैं।

# हर्षवर्द्धन ई० 606

हर्ष भारत के अन्तिम हिन्दू सार्वभौम सम्राट् थे यह जहांवीर, विजयी, दानशील थे वहाँ स्वयं कवि विद्वान् और विद्वानों के आश्रयदाता भी थे अन्तिम दिनों में यह वौद्ध हो गये थे। इसके विरचित रत्नावली और प्रियदर्शिका दो नाटिकायें और तीसरा नागानन्द नाटक है। प्रियदर्शिका सबसे पहले और रत्नावली सबसे अन्तिम कुछ विद्वानों के मत में यह नाटक उसकी स्वयं की रचना नहीं है तथा किसी कवि ने उन्हें लिखकर प्रचुर धन लेकर राजा के नाम पर प्रसिद्ध कर दिया। टीकाकारों ने काव्यप्रकाश की[1] पंक्ति की व्याख्या करते हुए रत्नावली को धावक की कृति माना है।

रत्नावली यह एक नाटिका है इसके 4 अंक हैं इस में भास के स्वप्न-वासवदत्ता का ही कथानक है केवल भेद इतना है कि इसकी नायिका लंका की राजपुत्री रत्नावली है। वासवदत्ता की मृत्यु की अफवा केवल लंका के राजा के लिए ही उड़ाई गई थी जब की वासवदत्ता वत्सराज उदयन के साथ ही थी। इसके नायक वत्सराज उदयन का स्वभाव वासवदत्ता के नायक उदयन से भिन्न है। स्वप्नवासवदत्ता का नायक वासवदत्ता की जीवितावस्था में दूसरा विवाह करना नहीं चाहता था परन्तु इसका नायक वासवदत्ता के रहते ही विवाह करना चाहता है इस नाटिका की रचना नाट्य शास्त्र के नियमों को विशद करने के लिए ही की गई थी क्योंकि इसके अनेक स्थल दशरुपक में उदाहरण में उद्धृत हैं इसकी प्राकृत भाषा कालिदास के नाटकों के सदृश है इस पर भीमसेन विरचित टीका है।

प्रियदर्शिका यह अंकों की नाटिका है हर्ष ने उदयन की कथा को

1. श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्।

लेकर इसकी रचना की है । उदयन की कथा कथासरित्सागर तथा वृहत् कथामंजरी में मिलती है[1] कालिदास से पूर्व ही उदयन की कथा लोक प्रसिद्ध हो चुकी थी ।

नागानन्द—यह ५ अंकों का नाटक है इसके मंगला चरण में भगवान् बुद्ध की वन्दना है पर नाटक में पूर्णतया बौद्ध प्रभाव नहीं है इसकी कथा का संकेत वृहत्कथामंजरी तथा कथासरित्सागर और वेतालपंचविंशति में मिलता है ।

यज्ञ में होने वाली सर्पों की हत्या दूर करने के लिए और सर्पों को जीवित करने के लिए वह अपने प्राणों का बलिदान करता है और गौरी और गरुड़ दोनों मिलकर सर्पों को और जीमूतवाहन को पुनः जीवित करते है इस पर आत्माराम विरचित एक टीका है ।

## नोट हर्षवर्द्धन

ई० 606 के करीब कन्नौज और थानेश्वर में जो कुरुक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है प्रकारवर्द्धन नामक राजा राज्य करता था। इसका शासन धीरे-धीरे चारों ओर फैल रहा था इसके दो पुत्र राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन नाम के थे । जब युवराज राज्यवर्द्धन हूणों से युद्ध करने गया था तब प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु हो गई। ग्रहवर्मा मौखारी की, जो राज्यवर्द्धन के राज्यश्री नाम की भागिनी का पति था मृत्यु का समाचार पा कर उसके हत्यारे मालवा के राजा को हरा कर लौट रहा था उस समय शशांक नामक बंग के राजा ने राज्य वर्द्धन को अपने यहाँ बुलाकर धोखे से मार डाला इसके बाद 620 के करीब जनता के अत्यन्त आग्रह करने पर हर्ष वर्द्धन गद्दी पर बैठा । यह सिद्ध हो चुका है कि हर्षवर्द्धन आर्य्यावर्त का अन्तिम सम्राट था इसका राज्य पूर्व में आसाम तक उत्तर

१. प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—पूर्वमेघः

में नैपाल काश्मीर तक पश्चिम में मालवा और दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था। नर्मदा के दक्षिण में चालुक्य वंशीय पुलकेशीद्वितीय दक्षिण का सम्राट् था। वलभी के राजा ने भी हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली थी। ई० 640 तक हर्ष दिग्विजय करता रहा। इसके समय बौद्ध तथा वैदिक धर्म दोनों ही साथ-साथ उन्नत हो रहे थे। हर्षवर्द्धन स्वयं विद्वान् था और इसकी सभा में मयूर, मातंग-दिवाकर, धावक आदि अनेक विद्वान् थे उन सबमें बाण भट्ट श्रेष्ठ माना जाना था यह सदा चीनी यात्री Hiune Tsand को अपने साथ रखता था और इसी की सहायता से बुद्धधर्म उन्नत हो रहा था इसने चीन के राजा के पास अपना दूत भेज कर उससे स्नेह सम्बन्ध जोड़ा था ई०647 में इसकी मृत्यु हो गई और इसका राज्य छोटे-छोटे टुकड़ों में बट गया।

## भट्ट नारायण ई० 675

किन्वदन्ती के अनुसार भट्टनारायण उन ब्राह्मणों में से एक थे जिन्हें बंगाल के राजा आदिशूरआदित्य सेन ने कान्यकुब्ज से बुलाया था। इन्हें मृगराज की उपाधि थी, इन्होंने वेणिसंहार नाटक लिखा इस की कथा महाभारत से उन्हें चुनी थी। वेणिसंहार का अर्थ है कि द्रोपदी की खुली वेणि के संहार (संवारे जाने) की घटना का वर्णन है इसमें 6 अंक हैं और वीररस प्रधान है। ऐसा भी कहा जाता है कि वह सुप्रसिद्ध टैगोरवंश के आदि पुरुष थे इस नाटक का नायक युधिष्ठर है। नाटककार ने भरतवाक्य का प्रयोग युधिष्ठिर से करवाया है। भरतवाक्य का प्रयोग प्रायः नाटक का नायक ही करता है। इसमें शौरसेनी तथा मागधी इन दो प्राकृतों का प्रयोग हुआ है। इसकी उक्तियाँ बड़े ही अनूठे ढंग की हैं।[1] अश्वथामा के प्रति कर्ण की चुभती हुई उक्ति देखिये। चाहे मैं

---

1. सूतो वा सूत पुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म मया यत्तं तु पौरुषम्॥

सूत हूँ या सूत पुत्र हूँ अथवा कोई भी क्यों न हूँ इससे क्या ऊँचे कुल में जन्म पाना तो दैवाधीन है पर पौरुष तो मेरे अधीन है। रांगामाटी बंगाल प्रान्त के मुरशदाबाद जिले में एक कसबा है। उसका प्राचीन नाम (कर्ण सुवर्ण) है यह प्राचीन काल में बंगाल की राजधानी थी। यहाँ के शासक आदिशूर के कहने पर कन्नौज के महाराज वीरसिंह ने उनका यज्ञ करवाने को कन्नौज से 5 ब्राह्मण बंगाल भेजे थे। जो वहीं जाकर बस गये। (1) नारायण भट्ट, (2) दक्ष, (3) श्रीहर्ष, (4) छानउद, और (5) वेदगर्भ।

## भवभूति ई० 740

यह पद्मपुर के निवासी थे और उदुम्बर कुल के ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नीलकण्ठ तथा माता का नाम जतुकर्णी था। भवभूति का दूसरा नाम श्रीकण्ठ था। कवि का भवभूति नाम एक[1] सुन्दर प्रयोग के कारण पड़ गया। देवी पार्वती की वन्दना में बनाये हुए एक पद्य में श्रीकण्ठ ने भवमूर्ति का प्रयोग किया था जिससे चमत्कृत होकर पण्डितों ने कवि का उपनाम ही भवभूति रख दिया। भववूति शिव के भक्त थे उन्होंने अपने तीनों नाटकों की प्रस्तावना में संकेत मिलता है कि वह कालप्रियनाथ (उज्जयिनी के महाकाल) के सामने खेले जाने के लिये लिखे गये थे। भवभूति अपने अन्तिम दिनों में यशोर्वमा के आश्रित रहते थे। यशोवर्मा स्वयं विद्वान् और कवि थे। उसने खुद 'रामाभ्युदय' नाटक की रचना की यह नाटक उपलब्ध नहीं होता पर साहित्य ग्रन्थों में इस का उल्लेख मिलता है। स्वयं भवभूति व्याकरण, न्याय और मीमांसादि शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे इन की तीन रचनायें हैं। (1) मालती-माधव (2) महावीरचरित्र (3) और उत्तररामचरित्र।

---

1 गिरिजायाः स्तनौ वन्दे भवभूतिसिताननौ।
तपस्वी कां गतोऽवस्थामिति स्मेराननविव॥

मालतीमाधव 10 अंकों का प्रकरण है जिसमें कल्पित कथा है इसमें मालती और माधव के प्रेम का वर्णन है। महावीर चरित 7 अंकों का नाटक है इसमें राम के जीवन की कथा वर्णित है। उत्तररामचरित 7 अंकों का नाटक है इसमें राम के जीवन के उत्तर भाग की कथा वर्णित है।[1] इसमें करुणा रस है, साहित्यकार राजशेखर अपने को भवभूति का अवतार मानते थे। छन्दों में भवभूति शिखरिणी के अद्वितीय माने जाते हैं। क्षेमेन्द्र ने भवभूति की शिखरिणी की प्रशंसा की है।

करुणा रस के क्षेत्र में महाकवि भवभूति की समानता करने वाला दूसरा कोई कवि नहीं है।[2] गोवर्धनाचार्य्य ने इनके करुणा रस के विषय में अपनी आर्य्य सप्तशती में बड़ी प्रशंसा की है।

## अनङ्गहर्षमात्रराज ई० 800

इन का विरचित 'तापसवत्सराजचरित' नाम का नाटक है इनके पिता का नाम नरेन्द्रवर्द्धन था। इस नाटक का निर्देश ध्वन्यालोक और उसकी टीका लोचन में मिलता है इसका कथानक स्वप्नासवदत्ता और रत्नावली के सदृश है।

तापसवत्सराजचरित यह एक छोटा-सा नाटक है। इसमें यौगन्धरायण की युक्ति से वासवदत्ता का गायब होना, उसके वियोग में वत्सराज का तपस्वी होना। पद्मावती का वत्सराज के साथ विवाह करने का निश्चय। वासवदत्ता और वत्सराज दोनों का प्रयाग में आत्म-हत्या के

---

1 भवभूतेः शिखरिणी निरर्गल तरंगिणी।
रुचिरा घन सन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति ॥ सुवृत्ततिलके ॥
उत्तरे राम चरिते भवभूतिविशिष्यते।

2 भवभूतेः सम्बन्धात् भूधरभूरेख भारती भाति।
एतत् कृत कारुण्ये कि मन्था रोदिति ग्रावा ॥ गोवर्धनाचार्य्यः

लिये आना और रुमण्वान् नामक मंत्री के द्वारा इष्ट हेतु सिद्धि का फल प्रदर्शित कर उन दोनों का संयोग कराना वर्णित है।

## मुरारि ई० 850

मुरारि के विषय में जो कुछ परिचय मिलता है वह उसका एकमात्र साधन अनर्घराघव की प्रस्तावना है। यह मौद्गल्य गोत्री थे। इनके पिता का नाम वर्धमान और माता का नाम तन्तुमती था। वर्धमान महाकवि और विद्वान् थे। मुरारि को वाल्मीकि की उपाधि थी। यद्यपि मुरारि ने अपने निवास स्थान के बारे में कुछ भी नहीं कहा तो भी उन के नाटक में कलचूरी राजाओं की राजधानी माहिष्मती (नर्मदा के तट पर स्थित मानधाता) का विशेष वर्णन मिलने से अनुमान होता है कि वह माहिष्मती के कलचूरि वंश के किसी राजा का सभा पण्डित था। इनकी[1] गर्वोक्तियाँ भी परम प्रसिद्ध हैं वह कहते हैं समुद्र की तह को पाने में मंद्राचल ही समर्थ हो सकता है चाहे समुद्र को कई बन्दर ऊपर-ऊपर से पार कर गये हों पर समुद्र की गहराई को वह क्या जानें ठीक इसी प्रकार काव्य के अगाध सनुद्र की तह तक तो मुरारि ही पहुंच पाये हैं .केवल अकेले उन्हीं को उस (काव्य) की गहराई का पता है। दूसरे कवि तो बन्दर की तरह उछल कूद मचाते हैं केवल ऊपर-ऊपर ही घूमा करते हैं। इनकी केवल एक कृति ही उपलब्ध है अनर्घराघव नाटक इसमें 7 अंक हैं जिसमें ताड़का-वध से लेकर राम के राज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित

---

1 देवीवाचमुपासते हि वहवः सारं तु सारस्वतं
जानीते नितरामसौ गुरु कुलक्लिष्टो मुरारिः कविः
अब्धिर्लंघित एव वानर भटैः किन्त्वस्य गंभीरता
मापाताल निमग्न पीवर तनुंजानाति मंथाचलः

हैं और यह नाटक[1] दूसरों की अपेक्षा कठिन है।

इसमें अद्भुत और वीर रस पाया जाता है और अतिश्योक्ति का विशेष प्रयोग है। इसमें प्राकृत बोलने वाले पात्र कम होने से प्राकृत का भाग बहुत कम है। इसकी विलक्षण मौलिकता को देखकर किसी ने कहा है कि[2] मुरारि का मार्ग सब नाटककारों से भिन्न है। सच तो यह है कि अनर्घराघव में नाटकीय कला की अपेक्षा[2] पाण्डित्य का ही प्राधान्य है। भट्टोजीदीक्षित की सिद्धान्तकौमुदी में अनर्घराघव से अनेक उदाहरण दिये हैं।

## विशाखदत्त ई० 850

इन्होंने राजनीति को अपनाया है। मुद्राराक्षस ही इनकी एकमात्रकृति है इस नाटक की प्रस्तावना में इतना कुछ परिचय मिलता है कि इनके पिता का नाम महाराज पृथु और पितामह का नाम सामन्त वटेश्वरदत्त था विशाखदत्त ने भी राजनीति के कई खेल खेले थे। यह बंगाल के निवासी थे जब हर्ष का ज्वलन्त प्रताप बढ़ रहा था और गुप्त साम्राज्य का दीप बुझने की बाट देख रहा था ऐसे समय में विशाखदत्त का जन्म हुआ। हर्ष, भट्टनारायण और विशाखदत्त कुछ ही समय के हेर-फेर में हुए। याकोबी के मतानुसार मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में एक चन्द्र-ग्रहण[3] का संकेत मिलता है जो केवल इसलिए नहीं हो पाया गया कि चन्द्रमा के

---

1 मुरारि पद चिन्ताचेद् तदा माघे रतिं कुरु
मुरारि पद चिन्ताचेद् तथा माघे रतिं कुरु

2 मुरारेस्तृतीया पन्थाः

3 मुरारिपदचिन्तायां भव भूतेस्तु का कथा।
भवभूतिं परित्यज्य मुरारिमुररी कुरु॥
क्रूरग्रहः सकेतुश्चन्द्रमसं पूर्णमण्डलमिदानीम्।
अभिभवतुमिच्छति बलाद् रक्षत्येनंतु बुधयोगः॥

साथ बुधग्रह की स्थिति के कारण ग्रहण योग ठीक नहीं बैठता याकोबी के मतानुसार यह निथि 2 दिसम्बर 860 ई० को बैठती है इस आधार पर उन्होंने इस नाटक को नवमी सदी का उत्तरार्द्ध माना है। विशाखदत्त की केवल एक ही कृति हमें उपलब्ध है पर विशाखदत्त के नाम से एक दूसरी कृति का भी पता चलता है जिस नाटक का नाम है देवीचन्द्र गुप्तम् । विशाखदत्त ने ऐतिहासिक घटना को लिया है। नन्दवंश के राजा के द्वारा अपमानित चाणक्य उसका समूल नाश कर चन्द्रगुप्त मौर्य्य को राज्य-सिंहासन पर बिठाता है और नन्द के विश्वासपात्र मंत्री राक्षस को चन्द्रगुप्त के पक्ष में मिलाकर उसका मंत्री बनाता है। चाणक्य इस चाल में सफल हुआ। दशरूपककार ने मुद्राराक्षस की कथा का आधार गुणाढ्य की बृहत्कथा को बताया है।[1] चाणक्य राक्षस को वश किये बिना अपनी सफलता नहीं तमझता :—

मुद्राराक्षस इसमें 7 अंक हैं और इसका अंगीरस वीर है मुद्राराक्षस समग्र संस्कृत साहित्य में अपने ढंग का एक ही नाटक है यद्यपि इसकी रचना नाट्यशास्त्र के नियमों के सर्वथा अनुकूल नहीं हुई फिर भी यह एक अनूठा और बेजोड़ नाटक है। संस्कृत के अन्य नाटकों की भाँति रसप्रधान न होकर भी यह एक शुद्ध घटना-प्रधान नाटक है। राजनीति की कुटिल चालों और कूटनीति के दाव-पेचों का इसमें बड़ा ही सजीव और सफल चित्रण हुआ है इसके कथानक का केन्द्र-बिन्दु नंदवंश का महामात्य राक्षस है जिसकी योग्यता और स्वामिभक्ति पर मुग्ध होकर चाणिक्य चाहता है कि वह किसी प्रकार चन्द्रगुप्त का मंत्री होना स्वीकार कर ले। चाणिक्य यह भली-भाँति जानता था कि यदि राक्षस जैसा राजनीति धुरन्धर एवं स्वामिभक्त व्यक्ति चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री बनना स्वीकार कर ले तो चन्द्रगुप्त का राज्य अटल हो जायगा। बस इसी लक्ष को लेकर चाणिक्य और राक्षस जो राजनीति चालों की चोटें चलीं

1. अगृहीते राक्षसे किमुत्खातं नन्दवंशस्य (प्रथम अंक पृ० 26)

उन्हीं का इस नाटक के घटनाचक्र में रोचक चित्रण हुआ है। मुद्राराक्षस का घटनास्थल पाटलीपुत्र है जो उस समय एक समृद्ध नगर था सुभाषित ग्रन्थों में दिये गये उद्धरणों से पता चलता है कि विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस और देवीचन्द्र गुप्त के अतिरिक्त राघवानन्द नामक एक नाटक की रचना की पर यह कृति अब उपलब्ध नहीं होती। इस नाटक का नायक चाणिक्य है या चन्द्रगुप्त इस प्रश्न पर विद्वानों में काफी मतभेद है। मुद्राराक्षस में श्लेष का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग किया है।

## शाक्तिभद्र 900 ई०

मालावार की जनश्रुति के आधार पर शक्तिभद्र आदिशंकराचार्य के शिष्य थे। महामहोपाध्याय कुप्पूस्वामि शास्त्री ने शक्तिभद्र विरचित 'आश्चर्य्यचूड़ामणि' को उत्तररामचरित के बाद सर्वोत्कृष्ट रामनाटक माना है। भास के नाटकों की भाँति इसमें भी नान्दी[1] के बाद सूत्रधार आता है आश्चर्य्यचूड़ामणि में शूर्पणखा प्रसंग से लेकर लंका विजय और सीता की अग्नि परीक्षा तक कथा का वर्णन है।

## दिङ्नाग ई० 1000

इनका विरचित कुन्दमाला नाम नाटक है। कुछ विद्वानों का कथन है कि उसके रचयिता बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग है जिनका उल्लेख मेघदूत[2] के 14 पद्य में आया है और जिनको मल्लिनाथ ने उक्त पद्य की अपनी टीका में कालिदास का समकालीन और प्रतिस्पर्धा कहा है किन्तु नई खोज के आधार पर उपरोक्त मत सर्वथा निराधार सिद्ध हो चुका है।

1. नाद्यन्ते ततः प्रविशवि सूत्रधारः
2. स्थानादस्मात् सरसनिचुला दुत्पतोदङ्मुखः खं।
   दिङ्नागानांपथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान्॥

कुन्दमाला की रचना दिङ्नाग जैसे बौद्ध दार्शनिक द्वारा नहीं मानी जा सकती, क्योंकि कुन्दमाला में आर्षवैदिक धर्म का ही दिग्दर्शन पाया जाता है जो एक बौद्ध कवि अथवा दार्शनिक द्वारा कभी सम्भव नहीं। वास्तव में कुन्दमाला के कर्ता कोई दूसरे दिङ्नाग या धीरनाग हैं। इसमें लक्ष्मण गर्भवती सीता को राम के आदेश से गंगा तट पर छोड़ आते हैं और अन्त में कुन्द पुष्पों की माला को गंगा में बहते देखकर यह सीता की गुथी हुई है इस अनुमान से सीता को पा लेते हैं।

## मधुसूदनदास और दामोदर मिश्र ई० 1100

इन दोनों के अलग-अलग हनुमान नाटक उपलब्ध हैं। 9 या 10 अंकों की पुस्तक दामोदर मिश्र विरचित है। मधुसूदनदास और दामोदर मिश्र में भी अधिक प्राचीन कौन है। इसका भी निश्चय नहीं हो सकता, परन्तु मधुसूदनदास से दामोदर मिश्र प्राचीन माना जाता है। मधुसूदन का नाटक 10 अंकों का होने पर भी उसकी श्लोक संख्या 730 है। दामोदर मिश्र के 14 अंकों के नाटक में केवल 581 श्लोक हैं। इन दोनों में समान श्लोक 300 हैं। इस नाटक के आरम्भ में नान्दी के श्लोकों के बाद स्थापना नहीं है। इसमें रामायण की कथा, कुछ भेद से वर्णित है। इसमें प्राकृत भाषा नहीं है। संस्कृत-गद्य भी बहुत कम है। इसलिए इसको नाटकाभास या छाया नाटक कहते हैं इसमें पात्रों की बहुसंख्यकता तथा विदुषक का अभाव है। दामोदर मिश्र की पुस्तक पर चन्द्रशेखर, नारायण, बलभद्र मिश्र और रामतारण शिरोमणि की टीकायें हैं जिनमें रामतारण की टीक प्रकाशित और स्वच्छ है।

## कृष्णमिश्र ई० 1100

इनका विरचित प्रवोधचन्द्रोदय नाम का नाटक है। कृष्णमिश्र दण्डी प्रशासी थे इनके विषय में कहा जाता है कि इनके यहां वेदान्त का उपदेश होता था परन्तु इनका एक शिष्य ऐसा था जिसकी प्रवृत्ति सदैव काव्य-अलंकार की ओर ही झुकती थी और वेदान्त से बहुत घृणा करता था। उसके उपदेश के लिए कवि ने यह वेदान्त गर्भ नाटक रचा। कृष्ण-मिश्र जेजक भुक्ति के राजा कीर्तिवर्मा के शासन काल में हुए और उनके ही दरबार में यह प्रबोध चन्द्रोदय नाटक खेला गया था। यह शान्त-रस प्रधान नाटक है इसमें वेदान्त के अद्वैतवाद का रोचक ढंग से प्रतिपादन किया गया है दार्शनिक दृष्टि से यह नाटक अत्यन्त महत्व का है। इस नाटक में 6 अंक और 8 टीकायें हैं। अप्पयदीक्षित और मथुरानाथ तर्कवागीश की टीकायें बड़ी प्रसिद्ध है।

### नोट

यमुना और नर्मदा के बीच में बुन्देलखण्ड का प्रान्त प्राचीन काल में जेजक भुक्ति के नाम से प्रसिद्ध था और यहां के शासक चंदेले थे। बुन्देलखण्ड (बहेलखण्ड भगलखण्ड) के दक्षिण भाग को प्राचीन काल में चेदी कहते थे और वहां के शासक कलचूरी राजा थे। चन्देल तथा कलचूरि राजाओं में परस्पर विवाह सम्बन्ध होते थे। इतिहास में चन्देलों की प्रसिद्धि नवमशतक के आरम्भ से है। ई० 831 के लगभग नन्नुक चन्देल

ने बुन्देलखण्ड में अनेक किले बनाये ई० 916 में हर्ष चन्देल हुआ इसका सम्बन्धी भीमट नाम का नाटककार कालिंजर-पति कहलाता था। राजशेखर कवि के कथनानुसार इसके विरचित 5 नाटक थे जिन में स्वप्न-दशानन बहुत प्रसिद्ध था। हर्ष चन्देल के पुत्र यशोवर्मा हुए। ई० 1049 से ई० 1100 तक चन्देल वंश का कीर्तिवर्मा राजा राज्य करता था इसके समय मैं कृष्णमिश्र ने प्रबोध चन्द्रोदय नाटक रचा था जो ई० 1065 में इसके दरबार में खेला गया। ई० 1203 में मुसलमानों ने यह राज्य छीन लिया।

## जयदेव ई० 1200

इन्होंने प्रसन्न राघव नाटक की रचना की यह विदर्भ देश के कुण्ठित नगर के निवासी थे उनके पिता का नाम महादेव माता का नाम सुमित्रा था इन्होंने चन्द्रालोक नामक प्रसिद्ध अलङ्कार ग्रन्थ की रचना की यह गीतगोविन्द के रचयिना जयदेव से सर्वथा भिन्न हैं कवि होने के साथ ही वे उच्चकोटि के तार्किक भी थे प्रसन्नराघव 7 अङ्कों का नाटक है इसमें रामायण की कथा अनेक रोचक परिवर्तनों के साथ चित्रित है इसमें बड़ी-बड़ी सुन्दर युक्तियां हैं गोस्वामी तुलसीदासजी ने उनके कई पद्यों का अनुवाद करके अपने रामचरितमानस में लिखा है पीयूषवर्ष इनकी उपाधि थी।